VAISESIKA - SUBSTANCE

वैशेषिक - द्रव्य

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

वैशेषिक दर्शन में कणाद ने जिस सात भाव और अभाव पदार्थ की चर्चा की है उनमें से पहला पदार्थ द्रव्य (Substance)है।द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि,"क्रिया-गुणवत समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम"।द्रव्य ,गुण और कर्म का अधिष्ठान है और अपने कार्यों का उपादान कारण है।द्रव्य ,गुण और कर्म का आधार है।द्रव्य के बिना गुण और कर्म की कल्पना भी असम्भव है।द्रव्य गुणों का आश्रय है।गुणों का द्रव्य से समवाय सम्बन्ध होता है।जैसे किसी रंग के सूत के संयोग से वस्त्र का निर्माण होता है।यहाँ सूत वस्त्र का समवायी कारण है, क्योंकि वह वस्त्र उन्हीं सुतों से बना है और उसमें अंतर्निहित है।

द्रव्य नौ प्रकार होते हैं -1 पृथ्वी (Earth) 2अग्नि(Fire) 3 वायु(Air) 4 जल(Water) 5 आकाश(Ether) 6 दिक(Space) 7 काल(Time) 8 आत्मा(Self) 9 मन (Mind) । इनमें प्रथम पांच को पंचभूत(Five Physical Element)कहा जाता है। क्योंकि प्रत्येक में कोई ना कोई विशेष गुण पाया जाता है जिसका बाय इंद्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष होता है पृथ्वी का विशेष गुण है गंध और वस्तुओं में जो गंध का अनुभव होता है वह इस कारण से है कि उनमें कुछ पृथ्वी का अंश भी सम्मिलित रहता है इसलिए गदला पानी महकता है स्वच्छ जल नहीं। जल का विशेष गुण है रस, वायु का स्पर्श ,आकाश का शब्द । यह पांचो विशेष गुण बाह्यइंद्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं जिस इंद्रिय से जिस विशेष गुण का प्रत्यक्ष होता है उसी के आधारभूत द्रव्य से उस इंद्रिय की उत्पत्ति होती है जैसे घ्राणइंद्रिय पृथ्वी के तत्वों से निर्मित है।रसनेन्द्रिय जल के तत्वों से। इसी तरह चक्षु का उपादान कारण तेज त्वचा का वायु श्रवणइंद्रिय का उपादान कारण आकाश है।

पृथ्वी के परमाणु नित्य हैं और उससे बने हुए पदार्थ अनित्य हैं। रूप ,रस, स्पर्श गंध, संख्या, परिमाण परत्व, अपरत्व आदि पृथ्वी के गुण हैं। गंध उसका विशेष गुण है।नित्य और अनित्य दोनों प्रकार की पृथ्वी के
रूप रस और स्पर्श अनित्य और ताप के कारण होते हैं।

जल के परमाणु नित्य हैं और जल से निर्मित वस्तुएँ अनित्य हैं।जल के गुण हैं - रस, रूप, स्पर्श,गुरुत्व, वेग, परिमाण, संयोग विभाग, परत्व और अपरत्व इत्यादि।रस जल का

विशेष गुण होता है।जलत्व जल में समवेत होता है और इसके परमाणुओं के गुण नित्य तथा कार्यों का गुण अनित्य होता है।

वायु के परमाणु नित्य और वायु के कार्य अनित्य होता है।स्पर्श, वेग,संख्या, परिमाण,संयोग, विभाग, परत्व और अपरत्व इसके गुण हैं।स्पर्श इसका विशेष गुण है।वायुत्व वायु में समवेत है।

अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि परमाणु चार प्रकार के होते हैं और वे पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के परमाणु हैं।आकाश परमाणुओं से रहित है।आकाश का शेष भूतों से संयोग नहीं होता। परमाणु नित्य है ईश्वर उनको उत्पन्न या नष्ट नहीं कर सकता ।वह ईश्वर की तरह ही अनादि, अनंत है ।जगत का निर्माण परमाणुओं से ही होता है जो उसके उपादान कारण हैं। ईश्वर जगत का निमित्त कारण है। परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय होते हैं उनको गति देने वाला कोई बाहरी कारण होता है ।प्रलय की अवस्था में वे परस्पर पृथक और गति हीन होते हैं। पुराना वैशेषिक दर्शन जीवात्माओं में रहने वाले अदृश्य को परमाणुओं की गति का मूर्त द्रव्यों की उत्पत्ति का कारण मानता था। बाद के वैशेषिक दर्शन ने यह माना कि ईश्वर जीवत्माओं के अदृष्ट यानी धर्माधर्म की सहायता से परमाणुओं में गति उत्पन्न करता है और जीवात्माओं को सुख दुख भोग कराने के लिए उनका संयोग करके मूर्त पदार्थ उत्पन्न करता है।यह संयोग इस प्रकार होता है कि दो प्रमाणु मिलकर द्वयणुक बनता है जिसमें समवायी कारण दो प्रमाणु ,असमवायी कारण उनका संयोग और निमित्त कारण अदृष्ट है। इसी तरह तीन द्वयणुक से एक त्रायणुक और चार त्रायणुक के संयोग से एक चतुरणुक बनता है।चतुरणुक के छोटी या बड़ी संख्या में संयोग होने से छोटे-बड़े द्रव्य बनते हैं।

वैशेषिक दर्शन के परमाणु विचार और पाश्चात्य दर्शन के परमाणु विचार में जिसके संस्थापक डीमोक्रीटस कहे जाते हैं भेद किया जाता है ।डीमोक्रीटस मतानुसार परमाणुओं में सिर्फ परिणाम को लेकर भेद है गुण की दृष्टि से सभी परमाणु बराबर हैं ।परंतु वैशेषिक दर्शन में परमाणुओं के बीच गुणात्मक भेद को भी माना गया है। डेमोक्रिटस के अनुसार परमाणु स्वभावतः क्रियाशील है परंतु वैशेषिक ने परमाणुओं को स्वभावतः गति हीन माना है । वैशेषिक के मतानुसार परमाणुओं में गति बाहरी दबाव के कारण ही प्रति फलित होती है।

वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद ,जैन दर्शन के परमाणुवाद से भिन्न है।वैशेषिक दर्शन में परमाणुओं के विभिन्न प्रकार एवम उनके बिभिन्न गुणों को बताया गया है जैसे - पृथ्वी के परमाणु के चार गुण, जल के प्रमाणु तीन, अग्नि के प्रमाणु के दो और वायु के परमाणु के एक गुण होते हैं।विशेष गुणों के अतिरिक्त कुछ सामान्य गुण भी होते हैं।जैन दर्शन में परमाणुओं में प्रकार भेद नहीं माना गया है।सभी प्रमाणु एक जैसे होते हैं।उनके बिभिन्न

संघातों से अलग-अलग भूतों की उत्पत्ति होती है।

आकाश की तरह दिक और काल भी अगोचर द्रव्य हैं।दिक और काल के बिना भौतिक द्रव्यों कि व्याख्या असम्भव है।

दिक का कोई सामान्य नहीं है, इसका एक विशेष होता है।सभी भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व दिक में होता है।यदि दिक नहीं होता तो संसार की सभी वस्तुएँ एक दूसरे के अन्दर प्रविष्ट हो जाती।दूर, निकट पूर्व, पश्चिम आदि प्रत्ययों का आधार दिक ही है।किसी वस्तु की दूर या निकट स्थिति का असमवायी कारण संयोग होता है और संयोग का आश्रय दिक है जो एक है।आकाश पृथ्वी जल आदि की तरह एक भूत द्रव्य है, लेकिन दिक भूत द्रव्य नहीं है। फिर भी दोनों सत्य और बुद्धि निरपेक्ष हैं।

काल एक नित्य और सर्वब्यापक है।एक होने से इसका कोई सामान्य नहीं है।इसका एक विशेष होता है जो इसे अन्य नित्य द्रव्यों से पृथक करता है।काल का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता।यह अनुमान का विषय है।काल सारे विश्व में व्याप्त है और सभी परिवर्तनों का साधारण कारण है।काल के बिना परिवर्तन नहीं हो सकते।सारे परिवर्तन काल में ही होते हैं।क्षण, घड़ी, दिन, मास,वर्ष ,इत्यादि काल भेद उपाधियों के कारण हैं।

मन को वैशेषिक दर्शन में अ्न्तरिन्द्रीय माना गया है।बाह्य वस्तुओं के ज्ञान के लिए बाह्य इन्द्रियों की सत्ता को स्वीकार किया गया है उसी प्रकार आन्तरिक बातों को जानने के लियेआन्तरिक इन्द्रिय के रूप में मन की सत्ता को स्वीकार किया जाता है।मन नित्य है।इसका न उत्पाद है और न विनाश।मन अनेक है क्योंकि यह प्रत्येक देह में रहता है।प्रत्येक मन का एक विशेष होता है जो उसे अन्य मन से अलग करता है।मन आकाश, दिक काल और आत्मा की तरह अप्रत्यक्ष है लेकिन वह उनकी तरह निष्क्रिय नहीं है।

वैशेषिक दर्शन में आत्मा पर वही मत है जो न्याय दर्शन में है।दो प्रकार के आत्मा को वैशेषिक दर्शन में माना गया है - जीवात्मा और परमात्मा।जीवात्मा अनेक हैं, जितने शरीर हैं उतने जीवात्मा हैं परन्तु परमात्मा एक है।परमात्मा ईश्वर का दूसरा नाम है।

आत्मा नित्य पदार्थ है।प्रत्येक आत्मा बिभु है उसका ज्ञान, अनुभूति और संकल्प केवल उन्हीं वस्तुओं तक सीमित रहता है जो शरीर के सम्पर्क में रहती हैं।शरीर से पृथक होने पर आत्मा को विषयों का ज्ञान नहीं होता।आत्मा की सत्ता को प्रमाणित करने के लिये वैशेषिक ने कुछ युक्तियों का उपयोग किया है : -

चैतन्य एक गुण है इसका आधार कोई द्रव्य होना चाहिए।चैतन्य शरीर, इन्द्रियों या मन का गुण नहीं हो सकता।अतः इस गुण का आश्रय आत्मा है लेकिन चैतन्य आत्मा का स्वरूप

गुण नहीं है बल्कि आगन्तुक गुण है।आत्मा का शरीर और मन से संयोग होने पर उसमें चैतन्य-गुण का उदय होता है।

जिस प्रकार कुल्हाड़ी का उपयोग करने वाला कोई व्यक्ति होना चाहिए , उसी प्रकार ज्ञानेन्द्रियों का इस्तेमाल करने वाला कोई होना चाहिए।वही आत्मा है।

प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान, सुख, दुःख आदि का अनुभव करता है, यह वायु, आकाश, दिक, काल और मन के धर्म नहीं हैं।सुख, दुःख आदि आत्मा के ही गुण हैं।

श्वास-प्रश्वास, शरीर का बढ़ना, चोट और घाव का स्वतः ठीक हो जाना,मन की गतियाँ आदि आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करती हैं।